

## जगन्नाथ मंदिर पर वरिसत उपवधि वापस

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्र सरकार ने ओडिशा के पुरी में स्थित **श्री जगन्नाथ मंदिर** के लिये राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (National Monuments Authority-NMA) द्वारा जारी की गई वरिसत उपवधि को वापस ले लिया है।

- ओडिशा सरकार द्वारा भुवनेश्वर के 'एकमारा क्षेत्र' (Ekamra Kshetra) के मंदिरों के लिये भी उपनियमों को वापस लिये जाने की मांग की जा रही है।

### प्रमुख बंदि:

#### ■ वरिसत उपवधि का मसौदा:

##### • पृष्ठभूमि:

- केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2010 में प्राचीन स्मारक, पुरातात्विक स्थल और अवशेष (संशोधन और मान्यता) अधिनियम, 2010 के तहत राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) का गठन किया गया था।
  - NMA की प्राथमिक भूमिका भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण (ASI) द्वारा सूचीबद्ध संरचनाओं के लिये वरिसत उपवधि तैयार करना था।

##### • संरक्षण और उपवधि:

- प्राचीन स्मारक, पुरातात्विक स्थल और अवशेष (संशोधन और सत्यापन) अधिनियम, 2010 में यह प्रावधान किया गया है कि एसआई-संरक्षित स्मारकों के समीप नरिमाण गतिविधि को वनियमिति करने के लिये स्मारक-वशिष्ट वरिसत उपवधि तैयार की जानी चाहिये।
- वरिसत उपवधि के मसौदे को संसद द्वारा अनुमोदित किया जाना आवश्यक है।

#### ■ ओडिशा का मामला:

- राज्य सरकार के मतानुसार, 'इस उपवधि से पुरी स्थित 12वीं शताब्दी के श्री जगन्नाथ मंदिर के आसपास योजनाबद्ध अवसंरचना विकास में बाधा उत्पन्न होगी।'
- इसी तरह का वरिसत उपवधि मसौदा भुवनेश्वर स्थित दो मंदिरों के लिये भी तैयार किया गया है-
  - पहला: 13वीं शताब्दी में बना अनंत बसुदेव का वैष्णव मंदिर और
  - दूसरा: ब्रह्मेश्वर का शिव मंदिर। ये दोनों मंदिर एकमारा क्षेत्र में स्थित हैं।
- वर्ष 2020 में राज्य सरकार ने 1,126 एकड़ में फैले इस क्षेत्र के आसपास एक सौंदर्यीकरण परियोजना के कार्यान्वयन के साथ इसे एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना बनाई थी।

#### ■ जगन्नाथ मंदिर:

##### • नरिमाण:

- ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का नरिमाण 12वीं शताब्दी में **पूर्वी गंग राजवंश** (Eastern Ganga Dynasty) के राजा **अनंतवर्मन चोडगंग** देव द्वारा किया गया था।

##### • पौराणिक महत्त्व:

- जगन्नाथ पुरी मंदिर को 'यमनिका तीर्थ' भी कहा जाता है, जहाँ हद्वि मान्यताओं के अनुसार, पुरी में भगवान जगन्नाथ की उपस्थिति के कारण मृत्यु के देवता 'यम' की शक्ति समाप्त हो गई है।

• **स्थापत्य कला:**

- इस मंदिर को "सफेद पैगोडा" कहा जाता था और यह चारधाम तीर्थयात्रा (बदरीनाथ, द्वारका, पुरी, रामेश्वरम) का एक हिस्सा है।
- मंदिर के चार (पूरव में 'सहि द्वार', दक्षिण में 'अश्व द्वार', पश्चिम में 'व्याघरा द्वार' और उत्तर में 'हस्ता द्वार') मुख्य द्वार हैं। प्रत्येक द्वार पर नक्काशी की गई है।
- इसके प्रवेश द्वार के सामने अरुण स्तंभ या सूर्य स्तंभ स्थिति है, जो मूल रूप से कोणार्क के सूर्य मंदिर में स्थापित था।

• **महोत्सव:** वशिव प्रसिद्ध जगन्नाथ रथ यात्रा और बहुड़ा यात्रा।



■ **ओडिशा स्थिति अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारक:**

- [कोणार्क सूर्य मंदिर](#) (यूनेस्को वशिव वरिष्ठ स्थल)।
- [तारा तारणी मंदिर](#)।
- [लगिराज मंदिर](#)।
- [उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएँ](#)।

**प्राचीन स्मारक, पुरातत्व स्थल और अवशेष (संशोधन और मान्यता) अधिनियम, 2010**

■ **उद्देश्य:**

- राष्ट्रीय महत्त्व के रूप में घोषित सभी प्राचीन स्मारकों, पुरातत्विक स्थलों व अवशेषों और आसपास की सभी दशाओं में 300 मीटर (या कुछ मामलों में इससे अधिक) तक के क्षेत्रों का बचाव, संरक्षण एवं सुरक्षा करना।

■ **प्रावधान:**

- नषिद्ध क्षेत्र (किसी भी राष्ट्रीय महत्त्व के रूप में घोषित स्मारक या आस-पास के संरक्षित क्षेत्र से निकटतम संरक्षित सीमा से सभी दशाओं में 100 मीटर की दूरी तक का क्षेत्र) में किसी भी नरिमाण या पुनर्रिमाण की अनुमति नहीं है, परंतु मरम्मत या नवीनीकरण पर वचार कया जा सकता है।
- वनियमि क्क्षेत्र (किसी भी राष्ट्रीय महत्त्व के रूप में घोषित संरक्षित स्मारक और संरक्षित क्षेत्र से सभी दशाओं में 200 मीटर की दूरी तक का क्षेत्र) में मरम्मत/नवीनीकरण/नरिमाण/पुनर्रिमाण पर वचार कया जा सकता है।
- नषिद्ध और वनियमि क्क्षेत्रों में नरिमाण संबंधी कार्यों के लयि सभी आवेदन सक्षम अधिकारियों (Competent Authorities- CA) और फरि राष्ट्रीय स्मारक प्राधकिरण (National Monuments Authority- NMA) के समक्ष वचार के लयि प्रस्तुत कयि जाने चाहयि।
- राष्ट्रीय स्मारक प्राधकिरण (NMA) केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के तहत कार्य करता है।

